

Cultivation Practices - Bottle Gourd

Climate: It requires warm growing season with a temperature ranging between 180-300 C.

Land Preparation: It can be grown in various kinds of soils but sandy loam to loamy soils is ideal. Thoroughly plough the field and incorporate well-rotted FYM (farm yard manure) at a rate of 20-25 tonnes per hectare.For the rainy season, prepare raised beds to ensure proper drainage.For the summer crop, sow seeds in pits.

Seed and Sowing

Sowing Time: February- March; June-July & November-December (Under protection)

Seed Rate:

3-6 kg/ha

Seed Treatment: Bottle gourd seeds can be treated with chemical or biological agents to enhance germination and protect against diseases. Common treatments include soaking in water or succinic acid, and treating with fungicides like Carbendazim or biocontrol agents like Pseudomonas fluorescens or Trichoderma Viridae.

Spacing: Prepare 2.0 to 2.5 meter wide beds and sow seed on both the sides of beds at a distance of 45-60 cm.

Nutrient Management: Apply 20-25 tonnes of farmyard manure per acre before preparation of beds.NPK: A general recommendation is 100-120 kg N, 40-60 kg P2O5, and 40-60 kg K2O per hectare, with adjustments based on soil analysis.

Water Management: First irrigation should be given just after sowing. Crop requires frequent irrigations. Summer season crop requires irrigation at 6-7 days interval whereas sparingly during rainy season. Total number of irrigations would be 8-9.

Weed Management: Regular weeding, especially during the early stages of growth, is crucial, and the use of organic mulch can also help suppress weed growth. The application of appropriate pre-emergent herbicides before sowing can significantly reduce weed density.

Pest and Disease Management: A combination of preventative measures and targeted treatments is often the most effective approach. This includes practices like crop rotation, selecting resistant varieties, and implementing biological, cultural, and chemical control methods.

Harvesting: The crop is ready for harvesting in about 60-70 days after sowing depending upon variety and season. Harvest only tender and medium sized fruits which are still tender and shining in colour. In peak season, picking should be done every 3 or 4 days. Disclaimer: This is general recommendation of package of practices for the soybean, but specific recommendations may be followed according to local agriculture institutes/departments.

Disclaimer: This is general recommendation of package of practices for the Bottle Gourd, but specific recommendations may be followed according to local agriculture institutes/departments.



लौकी की खेती की विधि

जलवायु: लौकी के लिए गर्म मौसम आवश्यक है, तापमान 18–30°C के बीच होना चाहिए।

भूमि की तैयारी: यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है। खेत की गहरी जुताई करें और 20–25 टन/हेक्टेयर अच्छी तरह सड़े हुए गोबर/एफवायएम (FYM) मिलाएं। वर्षा ऋतु के लिए ऊँचे बिस्तर तैयार करें ताकि जल निकासी सुनिश्चित हो सके। गर्मी की फसल के लिए बीज गड्ढों में बोएं।

बीज और बुवाई:

बुवाई का समय: फरवरी–मार्च; जून–जुलाई और नवम्बर–दिसंबर (संरक्षित परिस्थितियों में)

बीज दर:

3–6 किग्रा/हेक्टेयर

बीज उपचार: बीजों को रासायनिक या जैविक एजेंटों से उपचारित किया जा सकता है ताकि अंकुरण बढ़े और रोगों से सुरक्षा हो। सामान्य उपचार में पानी में भिगोना, सक्सिनिक एसिड में भिगोना या कार्बेन्डाजिम और जैविक नियंत्रक जैसे प्सूडोमोनस फ्लोरेसेंस या ट्राइकोडर्मा विरिडे का उपयोग शामिल है।

दूरी: 2.0–2.5 मीटर चौड़े बिस्तर तैयार करें और बीज दोनों किनारों पर 45–60 से.मी. की दूरी पर बोएं।

पोषक तत्व प्रबंधन: बिस्तर तैयार करने से पहले 20–25 टन एफवायएम प्रति एकड़ दें। NPK: सामान्य अनुशंसा 100–120 किग्रा N, 40–60 किग्रा P२O५ और 40–60 किग्रा K२O प्रति हेक्टेयर है, मिट्टी विश्लेषण के अनुसार समायोजन किया जा सकता है।

जल प्रबंधन: बुवाई के तुरंत बाद पहली सिंचाई दें। फसल को नियमित रूप से पानी दें। गर्मी की फसल में 6–7 दिन अंतराल पर सिंचाई करें, वर्षा ऋतु में कम आवश्यकता होगी। कुल सिंचाइयों की संख्या 8–9 होगी।

निंदाई-गुड़ाई: शुरुआती विकास चरणों में नियमित निंदाई करें। जैविक मलच का उपयोग खरपतवार नियंत्रण में सहायक है। बुवाई से पहले प्री-इमर्जेंस हर्बीसाइड का उपयोग भी किया जा सकता है।

कीट और रोग प्रबंधन: प्रभावी नियंत्रण के लिए निवारक उपाय और लक्षित उपचार अपनाएं। इसमें फसल चक्र, प्रतिरोधी किस्मों का चयन और जैविक, सांस्कृतिक व रासायनिक नियंत्रण शामिल है।

कटाई: बुवाई के 60–70 दिन बाद फसल तैयार होती है, किस्म और मौसम पर निर्भर करता है। केवल नरम और मध्यम आकार के फल तोड़ें, मुख्य मौसम में प्रत्येक 3–4 दिन में फल तोड़ें।

अस्वीकरण : यह लौकी की खेती के सामान्य क्रियाओं का सुझाव है। क्षेत्र विशेष के अनुसार स्थानीय कृषि संस्थानों/विभागों की सलाह अवश्य लें।



दुधी भोपळा लागवड तंत्रज्ञान

हवामान: 18-30° सेल्सिअस तापमानासह उष्ण वाढीचा हंगाम आवश्यक असतो.

जमीन तयार करणे: हे विविध प्रकारच्या मातीत घेतले जाऊ शकते परंतु वालुकामय चिकणमाती ते चिकणमाती आदर्श आहे. शेताची चांगली नांगरट करा आणि चांगले कुजलेले शेणखत प्रति हेक्टर20-25 टन या दराने घाला. पावसाळ्यासाठी, योग्य निचरा सुनिश्चित करण्यासाठी उंच बेड तयार करा. उन्हाळी पिकासाठी, खड्ड्यांमध्ये बियाणे पेटा.

बियाणे आणि पेरणी

पेरणीची वेळ: फेब्रुवारी-मार्च; जून-जुलै आणि नोव्हेंबर-डिसेंबर (संरक्षणाखाली)

बियाणे दर:

3-6 किलो/हेक्टर

बीज प्रक्रिया: उगवण शक्ती वाढविण्यासाठी आणि रोगांपासून संरक्षण करण्यासाठी बियांवर रासायनिक किंवा जैविक घटकांनी प्रक्रिया करता येते. सामान्य उपचारांमध्ये पाण्यात किंवा सक्सीनिक ऍसिडमध्ये भिजवणे आणि कार्बेन्डाझिम सारख्या बुरशीनाशकांनी किंवा स्यूडोमोनास फ्लोरेसेन्स किंवा ट्रायकोडर्मा विरिडे सारख्या जैविक नियंत्रण घटकांनी प्रक्रिया करणे समाविष्ट आहे.

अंतर: 2.0 ते 2.5 मीटर रुंदीचे वाफे तयार करा आणि वाफ्यांच्या दोन्ही बाजूंना 45-60 सेमी अंतरावर बियाणे पेटा.

पोषकतत्वांचे व्यवस्थापन: वाफे तयार करण्यापूर्वी प्रति एकर 20–25 टन शेतातील खताचा वापर करा.NPK: माती विश्लेषणाच्या आधारे समायोजन करून प्रति हेक्टर 100–120 किलोनत्र, 40-60किलो स्फुरद आणि 40-60 किलो पालाश प्रति हेक्टर अशी सर्वसाधारण शिफारस आहे.

सिंचन: पेरणी नंतर लगेचच पहिले पाणी द्यावे. पिकाला वारंवार पाणी द्यावे लागते. उन्हाळी हंगामातील पिकाला 6-7 दिवसांच्या अंतराने पाणी द्यावे लागते तर पावसाळ्यात कमी प्रमाणात. एकूण सिंचनांची संख्या 8-9 असेल.

तण व्यवस्थापन: नियमित तण काढणे, विशेषतः वाढीच्या सुरुवातीच्या टप्प्यात, अत्यंत महत्वाचे आहे आणि सेंद्रिय आच्छादनाचा वापर देखील तणांच्या वाढीला दडपण्यास मदत करू शकतो. पेरणीपूर्वी योग्यपूर्व-उदयोन्मुख तणनाशकांचा वापर केल्याने तणांची घनता लक्षणीयरीत्या कमी होऊ शकते.

कीटक आणि रोग व्यवस्थापन: प्रतिबंधात्मक उपाय आणि लक्षित उपचारांचे संयोजन हा बहुतेकदा सर्वात प्रभावी दृष्टिकोन असतो. या मध्ये पीक फेरपालट, प्रतिरोधक वाणांची निवड, जैविक आणि रासायनिक नियंत्रण पद्धती लागू करणे यासारख्या पद्धतींचा समावेश आहे.

काढणी: लागवडी नंतर सुमारे 60-70 दिवसांत पीक कापणीसाठी तयार होते, जे जातीवर आणि हंगामानुसार अवलंबून असते. फक्त कोवळ्या आणि मध्यम आकाराच्या फळांची काढणी करावी अजूनही कोवळी आणि चमकदार रंगाची असतात. पीक हंगामात, दर 3 किंवा 4 दिवसांनी तोडणी करावी.

अस्वीकरण: दुधी भोपळा लागवड पद्धतीची ही सामान्य शिफारस आहे, परंतु स्थानिक कृषी संस्था/विभागांनुसार विशिष्ट शिफारसींचे पालन केले जाऊ शकते.

दूधी माटे कृषि पध्दति

हवामान: दूधी गरम हवामानमां सारी रीते ठाेगे थे. ठेगाऽवा माटे तापमान 18°C थी 30°C वऱ्ये योग्य रहे थे.

जमीन तैयार करवी : दूधी विविध प्रकारनी जमीनमां ठेगाऽी शकाय थे, परंतु रेताऴपोथीअथवा डबकीपोथी जमीन सौधी उत्तम गऱ्हाय थे. षेतरने सारी रीते षेऽी तेमां सऽी गथेवुं षातर (FYM) 20 थी 25 टन प्रति डेकटर मुजऴ नाऴवुं. वरसाढी मोसममां षाऴीनी निकास माटे ठेयाषाऴा षनाववां. ठेनाऴानी षाक माटे षीज षाऽामां वाववुं.

ऴीज अने वावेतर :

वावेतरनी समय: ड्रेऴ्ऴारी-मार्च, जून-जुवाःठ अने नवेम्ऴर-डिसेम्ऴर (रऴऱष डेःःऴ).

ऴीजनो ढर : 3 थी 6 डिवीऒ्राम प्रति डेकटर.

ऴीज सारवार : ऴीजना अंडुरऱामां वधारी करवा अने रोगोथी सुरऱ्हा माटे ऴीजने रासायऱ्णिकअथवा जैविक रीते सारवार आषवी. सामान्य रीते ऴीजने षाऴीमां अथवा Succinic Acid मां षवाऴवामां आवे थे. डूग नाशक ढवा जेवी डे Carbendazim * अथवा जैव नियंत्रक अेजन्ट जेवी डे *Pseudomonas fluorescens* अथवा *Trichoderma Viridae* वडे षऱ सारवार करी शकाय थे.

अंतर : 2.0 थी 2.5 मीटर षडोऴाषाऴा तैयार करीने ऴन्ने ऴाजुअे 45-60 से.मी अंतरे ऴीज वाववुं.

षोषक तत्व व्यवस्थाषन : षेतर तैयार करतां षडेवां 20 थी 25 टन प्रति डेकटर षेतरमांषातर ठेमेरवुं.

रासायऱ्णिक षातर माटे सामान्य षवामऱ्ण: नाःःऒ्रीजन (N) : 1 0 0-1 2 0 डि.ऒ्र।/डे,ड्रोस्ऱरस (P२O५): 40-60 डि.ऒ्र।/डे,षोऒाश (K२O): 40-60 डि.ऒ्र।/डे (जमीननी तषास मुजऴ मात्रामां डेरडार करवी.)

षाऴीनुं संयाषन : षडेवी सिंयाःठ वावऱ्णी षःःी तरत आषवी. षाकने वारंवार सिंयाःःनी जरूर रहे थे. ठेनाऴामां ढर 6-7 डिवसे सिंयाःठ करवी. वरसाढी मोसममां जरूर मुजऴ सिंयाःठकरवी. अेक षाकमां डुष 8-9सिंयाःठ आषवी षडे थे.

नीढामऱ्ण नियंत्रऱः षारंऱऱिक तऴक्कामां नियमित नीढऱ्ण करवी षूऴ जरूरी थे. नीढऱ्ण घऒाऽवा माटे सज्ष मूऴ्य (ऴूसी अथवा सुकां षांढऽा)नी ठषषयोग करी शकाय थे. वावऱ्णी षडेवां योग्य pre-emergent herbicidesआषवा थीनीढऱ्णनी संष्या घऒाऽवामां मढढ मूगे थे.

ज्षवात अने रोग नियंत्रऱऱः

ज्षवात अने रोग नियंत्रऱ्ण माटे अेकीडृत पध्दति वधु असरकारक थे. तेमां नीये मुजऴनी पध्दतिअोनी समावेश थाय थे:

षाक डेर ऴढवीकरवी

रोग ष्रतिरोधक ज़ातोनी ठषषयोग

जैविक, सांस्कुतिक अने रासायऱ्णिक नियंत्रऱ्ण पध्दतिअोनी संयोजन

काषऱणी : वावऱ्णी षःःी आशरे 60 थी 70 डिवसमां दूधी तोऽवा माटे तैयार थाय थे (ज़ात अने ऋतु ष्रमाऱ्णे समय ऴढऱ्वाय शडे) मध्यम कढनी, नरम अने यमकढार दूधी तोऽवी. षाकना वधाराना समय ढरमिथान ढर 3 थी 4 डिवसे दूधी तोऽवी.

अस्वीकरण: आ दूधीना षाक माटेना षेती पध्दतिअोनी सामान्य षवामऱ्ण थे, परंतु स्थानिक कृषि संस्थाओ/विऴागो अनुसार योक्कस षवामऱ्णोनुं षाषन करी शकाय थे.

^[1] It requires warm growing season with a temperature ranging between 180-300 C

^[2] It can be grown in various kinds of soils but sandy loam to loamy soils is ideal

^[3] Bottle gourd seeds can be treated with chemical or biological agents to enhance germination and protect against diseases

^[4] First irrigation should be given just after sowing

^[5] Regular weeding, especially during the early stages of growth, is crucial, and the use of organic mulch can also help suppress weed growth

^[6] A combination of preventative measures and targeted treatments is often the most effective approach

^[7] The crop is ready for harvesting in about 60-70 days after sowing depending upon variety and season

^[8] This is general recommendation of package of practices for the soybean, but specific recommendations may be followed according to local agriculture institutes/departments

^[9] This is general recommendation of package of practices for the Bottle Gourd, but specific recommendations may be followed according to local agriculture institutes/departments

^[10] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[11] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[12] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[13] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[14] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[15] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[16] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[17] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[18] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[19] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[20] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[21] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[22] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[23] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[24] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[25] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[26] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[27] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[28] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[29] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[30] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[31] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[32] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[33] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[34] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[35] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[36] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[37] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[38] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[39] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[40] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[41] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[42] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[43] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[44] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[45] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[46] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[47] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[48] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[49] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[50] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[51] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[52] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[53] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[54] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[55] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[56] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[57] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[58] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[59] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[60] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[61] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[62] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[63] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[64] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[65] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[66] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[67] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[68] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[69] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

^[70] यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उग सकती है, लेकिन बलुई दोमट से दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है

